ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 65-68**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

ग्रामीण विकास एवं महिला सशक्तिकरण में जीविका की भूमिका

डॉ0 गीता कुमारी
ग्राम– जसोइया, पो0– चरन, जिला– औरंगाबाद (बिहार) भारत

Received-05.01.2025, Revised-12.01.2025, Accepted-18.01.2025 **E-mail: drgita74@gmail.com**

सारांशः बिहार राज्य की कई योजनाएँ एवं कार्यक्रम देश और दुनिया के लिए अनुकरणीय बना हुआ है जिसमें जीविका योजना सबसे मुख्य है। वर्ष 2007 में विश्व बैंक की आर्थिक सहायता से बिहार रूरल लाइवलिहुड प्रोजेक्ट यॉनी जीविका राज्य में आरंभ की गई। इसका मुख्य उद्देश्य आजीविका संबंधी गतिविधियों के लिए सहयोग प्रदान करके गरीबी का उन्मूलन, ग्रामीण विकास तथा ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक और सामाजिक सश्क्तीकरण है। जीविका का लक्ष्य बेहतर सेवाओं की उपलब्धता और स्वरोजगार के अवसरों के लिए ऋण प्राप्त करने में सक्षम बनाने हेतु महिलाओं के लिए स्वयं सहायता समूहों और उनके संघों का निर्माण के जरिए ग्रामीण गरीबों की जीविका स्थिति में सुधार लाकर उनका सामाजिक और आर्थिक सशक्तीकरण करना है। जीविका के नाम से मशहूर बिहार ग्रामीण आजीविका प्रोत्साहन समिति राज्य के ग्रामीण विकास में मुख्य भूमिका निभा रही है। यह सस्था 15 वर्षों में राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था और समाज में व्यापक सकारात्मक परिवर्तन लाया है तथा ग्रामीण जीवन पद्धति को बदलकर रख दिया है।

कुंजीभूत शब्द– ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण, जीविका योजना, अनुकरणीय, सामाजिक सशक्तीकरण, स्वरोजगार

जीविका परियोजना बिहार के सभी जिला के सभी प्रखण्डों में चल रही है। इस परियोजना में सामुदायिक स्तर पर त्रिस्तरीय ढाँचे को अपनाया गया हैः टोला स्तर पर स्वयं सहायता समूह, ग्राम स्तर पर ग्राम संगठन और संकुल स्तर पर संकुल स्तरीय संघ। स्वयं सहायता समूहों के लिए निर्धारित सदस्य संख्या 12 से 15 व्यक्तियों की, ग्राम संगठन के लिए 12 से 15 स्वयं सहायता समूहों की ओर संकुल स्तरीय संघों के लिए 25 से 45 ग्राम संगठनों की है। सितम्बर 2022 तक राज्य में जीविका के अन्तर्गत 10.35 लाख स्वयं सहायता समूह गठित हुए, जिनमें 2.45 लाख समूहों का बैंकों के साथ ऋण संपर्क है। जीविका की पहुँच 1.27 करोड़ से भी अधिक ग्रामीण परिवारों तक है। ये सभी आँकड़े जीविका की सफलता की कहानी कह रही है।

जीविका के अन्तर्गत प्रगति (2017–18 से 2021–22)

सूचक	2017–18	2018–19	2019–20	2020–21	2021–22
गठित महिला स्वयं सहायता समूहों की संख्या	848.9	948.2	1028.1	1035.2	1035.5
गठित ग्राम संगठनों की संख्या	55.6	60.4	64.6	67.6	68.4
गठित संकुल स्तरीय की संख्या	0.9	1.0	1.2	1.4	1.4
बैंकों के साथ प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ ऋण संपर्कों वाले स्वयं समूहों की संख्या	810.4	1034.9	1211.5	1457.1	1586.6
बैंक ऋण को रकम (करोड़ रू)	8.2	12.0	15.5	21.1	24.0

स्त्रोत : जीविका, बिहार सरकार।

जीविका की सफल कार्यान्वयन और उम्मीद से बेहतर परिणाम को देखकर इसे और व्यापक बनाया जा रहा है। वर्ष 2022–23 जीविका के रूपांतरण के नए युग का आरंभ है। विविधतापूर्ण आजीविका पर फोकस कर रहा है। जीविका ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सभी घटकों में अपनी भूमिका का निर्वहण कर रहा है। जिसमें कृषि आधारित जीविक, कृषीतर जीविका, वित्तीय समावेश, खाद्य सुरक्षा पोषण और स्वास्थ्य, नवीकरणीय ऊर्जा, कौशल प्रशिक्षण, पर्यावरण और असुरक्षा में कमी संबंधी हस्तक्षेप आदि शामिल है। स्वयं सहायता समूहों द्वारा जीविका संबधी हस्तक्षेपों में कृषि और कृषि सहवर्ती क्षेत्र भी सम्मिलित है। जीविका ने खेती से संबंधित कई आजीविका हस्तक्षेपों पर काम कर रहा है, जैसे कि फसली सघनीकरण प्रणाली की परियोजना के अनतर्गत चावल सघनीकरण प्रणाली (श्री विधि), गेहूँ संघनीकरण प्रणाली (स्वी) और सब्जी एवं दलहन मूल सघनीकरण प्रणाली। फसल सघनीकरण प्रणाली श्री विधि की सफलता के बाद उसका विस्तार गेहूँ दलहन और सब्जियों तक भी किया गया है। सितम्बर 2022 तक 16.64 लाख किसानों ने धान की खेती और 8.78 लाख किसानों ने गेहूँ की खेती, 9.92 लाख किसानों ने सब्जियों की खेती और 20.61 लाख किसानों ने रसोई बाडत्री (किचन गार्डनिंग) का विकलप चुना है। रसोई बाड़ी की अवधारणा का आर्थ है छोटे भूखण्ड पर सालों भर सब्जियां और फल उपजाना। जीविका के सहयोग से 5.70 लाख किसानों ने मक्का और 3.32 लाख किसानों ने दलहनों की खेती की। कृषि क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने की ये गतिविधियाँ लगभग 28642 ग्राम संगठनों ने किया। कृषि मूल्य श्रृंखला में सुधार हेतु हस्तक्षेप के अन्तर्गत कटाई–तुड़ाई की बाद की सुविधाएँ और बाजार तक आसानी से पहुँच शामिल है। इन दोनों से किसानों को उत्पादक समूहों तथा महिला कृषक उत्पादक समूहों के जरिए अपने उत्पादों की बेतहर कीमत पाने में मदद मिलती है। जीविका द्वारा पूर्णिया जिले में मक्का मूल्य श्रृंखला संबंधी हस्तक्षेप पर कार्य किया गया है।

कृषि सहवर्ती जीविका गतिविधियों के तहत एक महत्वपूर्ण हस्तेक्षप राज्य सरकार के पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के साथ मिलकर चलाई जाने वाली समेकित मुर्गीपालन विकास योजना है। सितम्बर 2022 तक 1.87 लाख स्वयं सहायता समूह सदस्य मुर्गीपालन में लगे हैं। परियोजना को सब्सिडी आधारित मॉडल से आगे बढ़ाकर टिकाऊ मॉडल तक पहुँचाकर जीविका ने गया के शेरघाटी में मुर्गीपालन व्यवसाय का एक नया मॉडल तैयार किया है जो पूर्ण मूल्य मॉडल है। कॉम्फेड के साथ साझेदारी में दुग्ध सहकारी समितियों की स्थापना की गई है, जो अधिशेष दूध को बेहतर कीमत पर बिक्री के लिए परिवारों को जीविका द्वारा औपचारिक चैनल उपलब्ध कराया जा रहा है। दुग्ध संग्रहण इकाइयाँ स्थापित की गई है। सहरसा, सुपौल और मधेपुरा जिला में दुग्ध उत्पादकों को विपणन संपर्क सुविधा देने के लिए जीविका द्वारा कौशिकी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड की स्थापना की गई हैं। सितम्बर 2022 तक 1.16 लाख सदस्य गव्य उत्पादन में लगे हैं। पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग से साझेदारी करके जीविका बकरियों

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

का वितरण करती है। पशु–सखियों का एक समूह विकसित किया गया है जो बकरी पालन संबंधी अनेक सेवाएँ दे रही है। पशु सखी मॉडल के तहत समुदाय की 3094 कैडर प्रशिक्षित किए गए हैं। सितम्बर 2022 तक 2.63 लाख स्वयं सहायता समूह सदस्य बकरीपालन में लगे थे। जीविका मछली पालन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सरकार ने घोषणा किया है कि जल जीवन हरियाली अभियान के अन्तर्गत चिन्हित तालाबों का रख–रखाव और मछली पालन के लिए स्वयं सहायता समूहों को सुपुर्द किया जाएगा। इसके तहत, जीविका ने अररिया जिले में समेकित मछली पालन की एक मार्गदर्शी परियोजना आरंभ की है। अभी तक 26 जिलों में 280 तालाब स्वयं सहायता समूहों को आबंटित किए गए हैं, जिसमें 65 तालाबों में मछली पालन हो रहा है। अभी 65 मत्स्य सखियों के सहयोग से पूरे राज्य में 72 मछली उत्पादक समूह गठित किए गए हैं। जीविका ने मधुमक्खी पालन का विस्तार 22 जिलों के 95 प्रखण्डों में किया गया है। डाबर इंडिया लिमिटेड और काम्फेड की साझीदारी में जीविका शहद प्रसंस्करण और पैकिंग की सुविधा उपलब्ध करा रही है। शहद उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए जीविका अनय कई माध्यमों से तत्पर है। सितम्बर 2022 तक 299 उत्पादक समूहों की छत्रछाया में 7693 मधुमक्खी पालकों को गोलबंद किया गया है।

जीविका वित्तीय समावेशन में भी अपनी भूमिका निभा रही है। जीविका ने स्वयं सहायता समूह आधारित वित्तीय पहुँच का दृष्टिकोण अपनाया है। वित्तीय समावेश योजना के तहत कई सदस्यों को किफायती बीमा आच्छादन के साथ जोड़ने में सहयोग किया है। बैंकिंग हस्तक्षेप में 4571 बैंक सखियों को व्यवहार परिवर्तन अभिकर्ता के रूप में चुना गया है। इसके कारण 7881.4 करोड़ रू0 की लेन–देन हुई है और 1934.2 लाख का कमीशन मिला है।

ग्रामीण बिहार में जीविका का खाद्य सुरक्षा, पोषण और स्वास्थ्य में भी हस्तक्षेप है। खाद्यान्नों की उपलब्धता दूर करने के लिए जीविका ने ग्राम संगठन के स्तर पर खाद्य कोष की अवधारणा लागू की है। खाद्य सुरक्षा कोष हस्तक्षेप के तहत ग्रम संगठन को 1.60 लाख रू0 एकमुश्त चक्रानुसारी कोष के रूप में उपलब्ध कराए गए है। समुदाय संचारित नवाचारी वित्तीय ऋण होता है जो ग्राम संगठन के अंतर्गत आने वाले स्वयं सहायता समूह सदस्यों को सिंगल विंडो उपलब्ध कराता है। इससे गुणवत्तापूर्ण खाद्यान्नों तथा अन्य खाद्य सामग्रियों का उचित मूल्य पर वितरण सुनिश्चित होता है। यह कोष सबसे गरीब और असुरक्षित परिवारों के लिए है। सितम्बर 2022 तक 0.48 लाख ग्राम संगठनों को खाद्य कोष प्राप्त हुआ था। जीविका ने ग्राम संगठनों में स्वास्थ्य जोखिम कोष बनाया है जो एक सर्वव्यापी कार्यक्रम है और इसका मकसद स्वयं सहायता समूह से जुड़े परिवारों को स्वास्थ्य और चिकित्सा संबंधी आपात स्थितियों के लिए किफायती धनराशि उपलब्ध कराना है। सितम्बर 2022 तक कुल 0.51 लाख ग्राम संगठनों को स्वास्थ्य जोखिम कोष मिला है।

जीविका नवीकरणीय ऊर्जा के क्रियाकलाप में भी लगी हुई है। इसने जीविका वीमन 'इनिशिएटिव फॉर रिन्यूवल एनजी एंड साल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड' नामक सौर ऊर्जा कंपनी बनाया है जिसे 'जे वायर्स' के नाम से जाना जाता है। ये विभिन्न संस्थानों के साथ मिलकर सौर और विद्यत् उत्पादों के वितरण कस्टमाइज्ड स्थापना सेवाओं के लिए काम कर रही है। कंपनी ने सोलन लैंप एसेंबल, बीएलडीसी पंखे, लेड बल्बों आदि की उत्पादन एवं बिक्री कर रही है।

राज्य सरकार पर्यावरण संबंधी कई कार्य कर रही है जिसमें जीविका भी अपनी भूमिका निभा रही है। हरित जीविका हरित बिहार अभियान के तहत 2021–22 में वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के सहयोग से जीविका ने पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान केन्द्रित कर समुदाय के सदस्यों को पौधा उपलब्ध कराने की पहल की और लगभग 1 करोड़ पौधे लगाए गए। जीविका के लिए दीदी की नर्सरी कार्यक्रम स्वच्छ और हरा–भरा परिवेश के लिए किया गया। इसके लिए सितम्बर 2022 तक कुल 483 पौधशालाएँ स्थापित की गई।

जीविका ग्रामीण बिहार में निःशक्तता ग्रस्त व्यक्तियों के लिए विकास पथ निर्माण हेतु तत्पर है। निःशक्तता ग्रस्त व्यक्तियों के समग्रता में सशक्तीकरण पुनर्वास और सामाजिक समावेश को समेकित करने के लिए साइट सेवर्स और बिहार राज्य विद्युत् संचरण कंपनी लि0 के साथ मिलकर जीविका ने 'दिव्यग्राम' की छतरी तले उत्पादक कंपनी स्थापित करने के लिए आवासीय प्रशिक्षण आयोजित किया। वर्तमान में 9896 स्वयं सहायता समूह के सदस्य निशक्त हैं।

15 अगस्त 2018 को आरंभ हुए सतत जीविकोपार्जन योजना देशी शराब और ताड़ी के उत्पादन तथा बिक्री में पारंपरिक रूप से जुड़े परिवार जिनकी राज्य में शराबबंदी के बाद आर्थिक स्थिति कमजोर हो गयी है। ऐसे निर्धन परिवारों के साथ ही अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य लक्षित अत्यंत निर्धन परिवारों के लिए शुरू की गई है। इस योजना के क्रियान्वयन के लिए जीविका को नोडल अभिकरण नामित किया गया है। इस योजना के अभी तक 1.47 लाख परिवारों को सहयोग दिया गया है। इस योजना के तहत जीविका के विवधीकरण, क्षमता निर्माण और धन की उपलब्धता में सुधार के जरिए जीविका का टिकाऊ विकल्प उपलब्ध कराने की बात है।

जीविका की चर्चा हो रही हो और उसमें अगर दीदी की रसोई का जिक्र नहीं हो तो फिर यह चर्चा अधूरी है। दीदी की रसोई जीविका की नवीन पहल है जो काफी चर्चित है। जीविका के अन्तर्गत दीदी की रसोई समुदाय संचालित कैंटीन मॉडल हैं। अस्पतालों की रोगियों, बैंक के कर्मचारियों, स्कूली विद्यार्थियों आदि को गुणवत्तापूर्ण भोजन देने के मामले में यह उद्यम के सफल मॉडल के रूप में उभरा है। इसकी कई इकाईयाँ खोली गई है। यह सस्त में सवादिष्ट और स्वच्छ खाना उपलब्ध करा रही है।

जीविका ने सामाजिक कार्यों में भी अपनी भूमिका का निर्वहन किया है। शराबबंदी, दहेजबंदी, बाल विवाह निषेध, नशाबंदी आदि मामलों में जीविका दीदियों ने सराहनीय कार्य किया है जो अब भी अनवरत जारी है। कोविड–19 महामारी से ग्रामीण क्षेत्र में उत्पन्न समस्या की बड़ी जबावदेही जीविका पर आ गया था। कोविड के फैलाव को रोकन, ग्रामीण परिवारों तक मास्क, सेनिटाइजर, जीवनरक्षी स्वच्छता कीट और जागरूकता में जीविका की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही। जीविका दीदियों द्वारा बड़े पैमाने पर मास्क का उत्पादन भी किया गया। कोविड–19 की चुनौती का सामना करने के लिए जीविका द्वारा कई कार्य किए गए जिसमें प्रमुख है– तत्परता, जागरूकता, मास्क उत्पादन और आपूर्ति, अति गरीबों के लिए सुरक्षा संजाल, दरवाजे पर ही बैंकिंग सेवाएँ, ग्रामीण खुदरा दूकानों के जरिए, आवश्यक वस्तुएँ दीदी के रसोई के जरिए, संख्या संकुल किराया केन्द्रों और प्रोड्यूसर कंपनियों के जरिए कृषि सेवाएँ आदि।

जीविका की कमियाँ और समस्याएँ– जीविका राज्य सरकार की बड़ी और महत्वाकांक्षी योजना है। हालांकि यह योजना बाहर से सब कुछ ठीक दिखती है लेकिन इसमें समस्याएँ भी है। इसमें प्रमुख समस्या ग्रामीण इलाकों में जागरूकता एवं समझ की कमी और शिक्षा का अभाव है। लोग आज भी बैंक का कर्ज लेने से डरते हैं। वित्तीय कमी भी जीविका की बड़ी समस्या है। जीविका के तहत कर्ज की राशि का कम होना भी जरूरतमंदों को माइक्रो फाइनेंस कंपनियों के तरफ खिंचता है। ऐसे कंपनियाँ ऊँचे ब्याज दरों

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

पर कर्ज देती है और फिर यह आगे चलकर गरीब परिवारों के लिए एक समस्या बन जाती है। ग्रुप को कर्ज मिलती है और जब बंटती है तो एक जीविका दीदी के खाते में कम पैसे आती है जिससे उसे काम करने में काफी परेशानी होती है। भ्रष्टाचार भी जीविका की एक बड़ी समस्या हैं आए दिन जीविका के पदाधिकारियों पर भ्रष्टाचार के आरोप लगते रहते हैं। कई बार अधिकारियों का असहयोगात्मक रवैया भी जीविका दीदियों के मनोबल को तोड़ देती है। कई बार जीविका की पूरी व्यवस्था का बहुत नरम होना भी संकट बनता है। लोग पैसे लेकर उसे लौटने को लेकर लोग गंभीर नहीं होते। इससे उन्हें बैंकों से ब्याज पर कोई छूट नहीं मिलती है। अधिकतम महिलाओं को जोड़ना भी एक बड़ी चुनौती है। बैंकों का असहयोगात्मक रवैया भी जीविका के लिए बड़ी समस्या है।

जीविका का प्रभाव– जीविका परियोजना बिहार सरकार की अतिमहत्वाकांक्षी और बड़ी पहल है जो राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में लागू है और इसके केन्द्र में महिलाएँ है। इसने ग्रामीण जल–जीवन के प्रत्येक क्षेत्रों को प्रभावित किया है जो सकारात्मक है। राज्य की बहुसंख्यक आबादी (84%) गाँवों में रहती है। नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे के अनुसार लगभग 23% परिवारों की मुखिया घर की महिला है। जीविका से राज्य के लगभग 1.30 करोड़ महिलाएँ जुड़ी है। आंकड़ों के अध्ययन करने से पता चलता है कि लगभग 60% ग्रामीण आबादी प्रत्यक्ष रूप से जीविका से जुड़ी हुई है। इस प्रकार देख सकते हैं कि एक बड़ी आबादी में जीविका का हस्तक्षेप है। जीविका का उद्देश्य गरीबी उन्मूलन, ग्रामीण विकास और महिला सशक्तीकरण है। इन तीनों में जीविका निश्चित रूप से अपनी बड़ी भूमिका निभा रही है और अपने उद्देश्यों में सफल होती दिख रही है।

गरीबी उन्मूलन– बिहार में गरीबी एक बड़ी समस्या है विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी की स्थिति और भी भयावह है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्रों में जीविका का हस्तक्षेप ने निश्चित रूप से ग्रामीण गरीबी को कम किया है। अभी हाल ही में 17 जुलाई 2023 को नीति आयोग द्वारा बहुआयामी गरीबी सूचकांक के अनुसार बिहार राज्य में 18.13% गरीबी घटी है जो देश में सर्वाधिक है। राज्य में 2015–16 से 2019–21 के मध्य 2,25,11,679 लोग गरीबी से बाहर निकले हैं जो संख्या के लिहाज से उत्तर प्रदेश के बाद सर्वाधिक है। इसमें से बड़ी आबादी ग्रामीण हैं। वर्ष 2015–16 से 2019–21 के मध्य बिहार में 19.05% ग्रामीण गरीबी घटी है। वर्ष 2015–16 में बिहार में ग्रामीण गरीबी 56.005% थी जो घटकर 2019–21 में 36.95% रह गई है। राज्य में गरीबी घटने में कई कारकों का योगदान है जिसमें जीविका की भूमिका प्रमुख है। गरीबी निवारण को लेकर जीविका व स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा महिला समूह का गठन किया गया है। समाज के गरीब परिवार की महिलाओ का समूह बनाकर बैंक से लिंकेज किया जा रहा है। इसके साथ ही बैंक से रूपए लेन–देन करने की जानकारी देने का काम भी किया जा रहा है। सरकार की ओर से सिलाई सेंटर, मशरूम की खेती, रेडीमेड गारमेंट्स, अगरबती निर्माण, और ऊर्जा संबंधी वस्तुओं का निर्माण, लेड बल्ब, लेड पंखे निर्माण सहित अन्य रोजगार प्रशिक्षण दिया जा रहा है। समूह की महिलाएँ प्रशिक्षण प्राप्त कर और बैंक से ऋण लेकर स्वरोजगार से जुड़ी रही है। मधुक्खी पालन, बकरी पालन दीदी की रसोई आदि से ग्रामीण क्षेत्रों में आय बढ़ी है।

महिला सशक्तीकरण– बिहार महिला सशक्तीकरण का प्रेरणास्त्रोत बना हुआ है। राज्य की कई योजनाओं और कार्यक्रम ने महिला सशक्तीकरण को संभव बनाया जिसमें जीविका की भूमिका सर्वोपरि है। जीविका परियोजना के केन्द्र में ग्रामीण महिलाएँ हैं। राज्य में महिला सशक्तीकरण एवं उनके सामाजिक तथा आर्थिक विकास के दिशा में कई सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन किय जा रहा है जिसमें जीविका दीदियों की इसमें महत्वपूर्ण योगदान है। स्वयं सहायता समूह की महिलाओं की आर्थिक गतिविधि तीव्र है। महिलाएँ छोट–छोटे व्यवसाय कर आत्मनिर्भर बन रही है। बिहार जैसे आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े राज्य में वो भी ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ उद्यमी बन रही है, यह महिला सशक्तीकरण का प्रत्यक्ष प्रमाण है। मशरूम उत्पादन, शहद उत्पादन, लेड ब्लड, दीदी की रसोई सहित कई अन्य ग्रामीण आर्थिक तिविधियों में इनकी सक्रियता जबरदस्त है। मशरूम उत्पादन, अचार उत्पादन, शहद उत्पादन तथा अन्य छोटी–छोटी उत्पादन में लगे कई महिलाओं ने राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर कई पुरस्कार भी जाती हैं। ऐसी महिलाएँ सशक्तीकरण की उदाहरण प्रस्तुत कर रही है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्रों जैसे कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन, मधुमक्खी पालन, दूग्ध उत्पादन, मुर्गी पालन, सब्जी उत्पादन, बागवानी, रसोई बाड़ी आदि में जीविका का हस्तक्षेप है जिसके केन्द्र में महिलाएँ हैं। महिलाएँ खाद्य सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, प्रशिक्षण और स्वास्थ्य रक्षा का कार्य भी कर रही है। बैंक सखी, पशु सखी, मत्स्य सखी जैसी अवधारणाएँ महिलाओं को सशक्त बना रही है। जीविका दीदियों द्वारा संचालित दीदी की रसोई में काफी चर्चित मॉडल है। इससे जुड़े महिलाओं को रोजगार भी मिल रही है और आय में वृद्धि हो रही है। इसका विस्तार अभी भी जारी है। इस तरह के कार्यों में लगी महिलाएँ आर्थिक रूप से सशक्त हो रही है।

ग्रामीण विकास पर प्रभाव– जीविका परियोजना ग्रामीण विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। नए आँकड़ें के अनुसार राज्य की लगभग 84% आबादी गाँवों में रहती है। ग्रामीण क्षेत्रों में विकास हेतु केन्द्र और राज्य सरकार तरह–तरह की योजनाएँ चला रही है। जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक और सामाजिक विकास है। इनमें जीविका योजना का सकारात्मक प्रभाव ग्रामीण जन–जीवन पर व्यापक रूप से पड़ा है। राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि और उसके सहवर्ती क्षेत्र है। जीविका का कृषि एवं उसके सहवर्ती कार्य में पूरा हस्तक्षेप हैं कृषि में उत्पादन बढ़ाने की गतिविधियों में जीविका के स्वयं सहायता समूह सम्मिलित हैं। जीविका के सदस्यों द्वारा श्री विधि से चावल और गेहूँ की खेती को बढ़ावा देना, जीविका रसोई बाड़ी की अवधारणा तथा अन्य कई उपायों से कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी हुई है। आज मशरूम और शहद उत्पाद्न में बिहार का देश में प्रथम स्थान है, इसमें जीविका की बड़ी भूमिका है। बकरी पालन, मत्स्यपालन, मधुमक्खी पालन आदि में जीविका के हस्तक्षेप से शहद और दूध और मछली उत्पादन बढ़ा है। पशु सखी मॉडल और मछली पालन संबंधी हस्तक्षेप से आच्छादन और उत्पादन के लिहाज से उल्लेखनीय प्रगति हुई है। आज जो मछली उत्पादन में बिहार आत्मनिर्भर होने वाला है, इसमें जीविका की बड़ी भूमिका है। शहद का मार्केटिंग भी जीविका द्वारा अच्छे से किया जा रहा है। जीविका द्वारा ग्रामीण बाजार शुरू किए गए हैं जिसमें किराने की समान उपलब्ध कराया जा रहा है। इन सबसे ग्रामीण क्षेत्रों में आय बढ़ी है। कला एवं शिल्प संबंधी वस्तुएँ जैसे मधुबनी फोल्डर, सुजनी कला, बाबन बूटी कला, खेता कला, फोल्डर, लैपटॉप बैग, साड़ी, कालीन आदि उत्पादों को खादी मॉल, मेला, अमेजन, GeM आदि के माध्यम से ऑफलाइन एवं ऑनलाइन बेचने से बड़ा आर्थिक फायदा हो रहा है। जीविका द्वारा आरंभ की गई दीदी की रसोई आय के साथ–साथ रोजगार के अवसर भी बढ़ा रही है।

नवीकरणीय ऊर्जा के अन्तर्गत जीविका सौर और विद्युत् उत्पादों का उत्पादन और वितरण कर रही है। इसके लिए प्रशिक्षण कार्य भी चला रही है। जीविका ने वित्तीय समावेशन के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में लाखों सदस्यों को प्रधानमंत्री बीमा योजना और प्रधानमंत्री जीवन सुरक्षा जैसी योजनाओं के तहत बीमा आच्छादन भी उपलब्ध करा रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सेवा उपलब्ध कराने में भी जीविका मददगार साबित हो रही है। सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत जीविका समूह की महिलाएँ अत्यंत गरीब महिलाओं

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

को समूह से जोड़कर उसे स्वावलंबी बनने की गुर सिखाती है और उसे रोजगार के लिए प्रशिक्षण देती है और उसे पैसे उपलब्ध कराकर रोजगार से जोड़ा जाता है। योजना के अन्तर्गत कई गरीब महिलाएँ आत्मनिर्भर हो गई है और वह लोगों को रोजगार भी दे रही है। यह ग्रामीण क्षेत्रों में टिकाऊ जीविका उपलब्ध करा रही है। जीविका गरीब तबकों के लिए खाद्य सुरक्षा, पोषण स्वास्थ्य आदि उपलब्ध कराकर ग्रामीण क्षेत्रों में बदलाव ला रही है। जीविका के पर्यावरण संबंधी कई कार्यों ने ग्रामीण क्षेत्र की सूरत बदल रही है। बिहार का हरित आवरण अब बढ़कर 15% हो गया है।

निष्कर्ष– वर्ष 2007 में आरंभ हुई जीविका परियोजना अपने कार्य से ग्रामीण बिहार में क्रांति का रूप ले लिया है। राज्य ग्रामीण जनजीवन में हुए क्रांतिकारी बदलाव में जीविका की बड़ी भूमिका है। जीविका ने 15 वर्षों के अपने कामकाज से ग्रामीण बिहार में अर्थव्यवस्था और समाज की सूरत काफी हद तक बदल दी है। जीविका अपने उद्देश्यों में सफल होती दिख रही है। इसने गरीबी कम किया है, महिला सशक्तीकरण को संभव बनाया है और ग्रामीण विकास की धुरी बनती हुई दिख रही है। केन्द्र सरकार द्वारा भी जीविका परियोजना का तारीफ किया गया है और इस मॉडल को अपनाने की घोषणा भी की गई हैं इसकी सफलता से अभिभूत मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने इसे शहरों में भी लागू करने की घोषणा की है। बिहार जैसे ग्रामीण और गरीब राज्य में इसकी सफलता और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। जीविका गरीबों के लिए लक्षित है। कहा जाता है कि बिहार का विकास गाँवों और कृषि आधारित विभिन्न गतिविधियों से ही संभव है। जीविका इस बात को सही साबित कर सकती है, बशर्ते इसे और व्यापक बनाकर इसमें अधिक वित्तीय समावेशन किया जाए। भ्रष्टाचार पर नियंत्रण, जागरूकता और अधिक धन मुहैया कराकर इस योजना को और भी प्रभावी बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ0 नवीन कुमार : सामाजिक परिवर्तन में स्वयं सहायता समूह की भूमिका, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, प्रेमचन्द मार्ग, राजेन्द्रनगर, पटना।
2. वी. एन. सिंह (2010) : आधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण।
3. रामनरेश ठाकुर (2009) : रूरल वोमेन इम्पावरमेन्ट इन इंडिया, कनिष्क पब्लिसर्स, न्यू दिल्ली।
4. किशोर, एस. एण्ड गुप्ता के. (2014) : वोमेन इम्पावरमेंट इन इंडिया एण्ड इट्स स्टेट्स इकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल विक्ली, पेब्यूरी : 694–712.
5. डॉ रजनीश कुमार (2023) : योजनाएँ, कार्यक्रम एवं मुद्दे, नेशनल पब्लिकेशन, अशोक राजपथ, पटना–4.

*****